भेजा संदेसा खुदाए नें, बनी असराईल करो याद ।
तुम पीछे खबर फेरून की, सो मैं खबर दई बुनियाद ॥८६॥

धाम के धनी अक्षरातीत श्री राज जी महाराज ने उस समय आवेश के द्वारा किरंतन की वाणी उतरवाई। जिनमें मोमिन जो संकट देख रहे हैं । उन संकटों से बचाकर कैसे श्री राज जी महाराज अपनी पनाह में रखते हैं और शैतान रूप दज्जाल को कैसे फना कर देते हैं, कुरान की ये बातें याद कराई गई है । धाम के धनी श्री राजजी ने उसमें कहा है कि हम तुमको मूल बातें याद कराते हैं । असराईल की संतान का किस्सा देखो और याद करो और तुम्हें हैरून का साथ दिलवाकर तुम्हारे लिए फैरून की फौज को नील नदी (कुलजम) में नष्ट करके मूसा पैंगंबर की रक्षा की थी ।

दई तुमकों मैं कुलजम, इनको किया गरक ।
पढ़ो मेरे कलाम को, भागे सारी सक ॥८७॥

अब धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि ए मेरे प्यारे सुन्दरसाथ जी ! उसी प्रकार इस संसार रूपी दज्जाल से बचाने के लिए मैंने तुम्हें ब्रह्मवाणी कुलजम सरूप दिया है और इस वाणी की शक्ति से ही सारे संसार के दज्जाल, अबलीस रूप लोगों के अभिमान को तोड़कर निर्मल करना है । मेरी इस कुलजम सरूप की वाणी को पढ़ोगे तो तुम्हारे सब संदेह मिट जाएंगे ।

महामत कहे ऐ मोमिनों, सुकराना ल्याओ बजाए ।
दज्जाल सों लड़ाई, और क्यों कर लिये बचाए ॥८८॥

धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे सुन्दरसाथ जी ! श्री राजजी महाराज की मेहर का कोटि-कोटि आभार मानो कि उन्होंने किस प्रकार इस दुनियां में शरीयत और कर्मकाण्डी लोगों से, जो दज्जाल, अबलीस का रूप बन चुके थे, उनका संघर्ष कराया और तुम्हें अपनी अपार मेहर करके किस प्रकार बचा भी लिया ।

(प्रकरण ५४, चौपाई ३०१८)

लाल दास लसकर (दिल्ली काजियों के पास) को गए

उहां से आए बुढ़ानपुर, फेर पहुंचाया पैगाम ।
भई लड़ाई सरीयत सों, बीच दीन इसलाम ॥१॥

श्री प्राणनाथ जी उज्जैन से बुढ़ानपुर पहुंचे । वहां से फिर बादशाह के पास अपना संदेश भेजा । एक बार पुनः दीने-इसलाम निजानन्द सम्प्रदाय के सुन्दरसाथ का कट्टर शरीयत के कर्म काण्डी मुसलमानों के साथ संघर्ष छिड़ गया ।

Nijanand App

लाल पैगाम लेइ के, गया उत सरियत ।
करी काजी सों मुलाकात, लिख के भेजी तित ॥२॥

लालदास जी संदेश लेकर शरीयत के आधीन चलने वाले बादशाह के अधिकारियों के पास पंहुचे । काजी शेख इसलाम से भेंट की और श्री जी का लिखा पत्र घर में अन्दर उसके पास भेजा ।

काजी अन्दर बुलाए के, पूछनें लगा कलाम ।
कहा हते क्यों कर आए, जवाब दिया इस टाम ॥३॥

काजी ने लालदास जी को अंदर बुलाया और पूछा कि आप अब तक कहां रहे और अब किस काम के लिए आए हो ? तब लालदास जी ने जवाब दिया -

हमको हादी भेजिया, तुम पर सेख इसलाम ।
हमको जवाब दीजियो, जो भेजे तुम पर कलाम ॥४॥

हे शेख इसलाम ! हमको हमारे हादी ईमाम मेंहदी साहिब ने आपके पास भेजा है । जो हमारे हादी ने तुमको वचन लिखकर भेजे हैं, उनका उत्तर कृपया हमको दीजिए ।

पहिले तुम पर ल्याइया, मलूक चन्द अजमेर ।
सवाल कलाम अल्लाह के, ताको जवाब करो इन बेर ॥५॥

इससे पूर्व अजमेर से मलूक चन्द भाई आपके पास जो प्रश्न लेकर आए थे । उन वचनों पर विचार करके इस बार अवश्य उत्तर दे दीजिए ।

तब सेख इसलामें कह्या, ए तुमें खुले कलाम ।
हम कहें तुमको, ए यार था इस टाम ॥६॥

तब शेख इसलाम ने कहा आपको कुरान के छिपे रहस्यों के भेदों का अच्छी तरह से ज्ञान है । बाद में हम आपसे चर्चा करेंगे । अभी ये मेरा मित्र एक जरूरी कार्य से आया है।

प्रात समें तुम आइयो, तुमकों कहें हम ।
अब तो हम जात हैं, प्रात को कहियो तुम ॥७॥

आप कल प्रातः आना । तब हम आपके साथ चर्चा करेंगे । अभी हम कहीं बाहर जा रहे हैं । आप जो कुछ कहना चाहते हो, वह कल प्रातः ही कहना ।

Nijanand App

दिन दूसरे प्रात को, गए लाल नूर महम्मद ।
जाए के मुलाकात करी, जो साहिब सरियत हद ॥८॥

दूसरे दिन लालदास जी नूर महम्मद को साथ लेकर काजी के घर गए । शेख इसलाम शरीयत का सबसे बड़ा काजी था ।

भई बातें सेख इसलाम सों, तहां बैठे थे यार ।
मंगाए किताब सवाल की, करनें बैठे विचार ॥९॥

शेख इसलाम से चर्चा हुई । वहां उनके चाहने वाले और भी यार (काजी) बैठे थे । कुरान पर आधारित प्रश्नों की किताब उसने मांगी और उसी को लेकर विचार विमर्श होने लगा ।

बोले लोग सरियत के, एतो लिखी गलत ।
तब लालें जवाब दिया, कहा कहें तुमें इत ॥१०॥

शरीयत के खाविन्द काजी के यार इस ग्रन्थ में चर्चा के प्रसंग और सवाल गलत लिखे हैं इस तरह कहने लगे । ये सुन कर लालदास ने कहा ये दीने इसलाम की खास किताब है । आप इसको न समझ सकने के कारण से गलत कह रहे हो । तो हम आपको क्या कहें ।

हदीसां कुरान की, तुम नाम धरत इत ।
तो हम तुमसों क्या कहें, दावा रोज कयामत ॥११॥

ये सब कुरान की ही हदीसें हैं । आप इसको ही गलत कहते हो तो अब हम आपके सामने कयामत के जाहिर होने के दिन के बारे में क्या चर्चा करें ।

तब सेख इसलामें कहया, हम ना कहेंगे गलत ।
ए लिखनें में चूक है, है उमियों के दसकत ॥१२॥

तब शेख इसलाम ने कहा हम कुरान और हदीसों को गल्त नही कह सकते । इसमें लिखने वाले की भूल है । ऐसा लगता है कि कम पढ़े-लिखे लोगों की लिखावट है ।

तब लालें जवाब दिया, इनका दोस कछू नाहीं ।
तुम मायना लेओ अन्दर का, होए पहिचान तासों ताहीं ॥१३॥

तब लालदास जी ने उत्तर दिया इसमें लिखने वाले लोगों की जरा भी भूल नही है । आप इनके बातूनी अर्थ समझने की कोशिश करो । आपको हकीकत के ज्ञान का पता चल जाएगा ।

Nijanand App

लई किताब जो हाथ में, बैठा दिल पर दुसमन ।
तिने दिल फिराइया, तित लड़े साथ मोमिन ।।१४।।

शैतान अबलीस के आधीन रहने वाले मुसलमानों ने लालदास के हाथ से वह किताब छीन ली । उनके दिल पर अबलीस, शैतान ने, जो सबका दुश्मन है, बैठ कर बेईमानी भर दी तो वो मोमिनों से लड़ने लगे।

जवाब न होवे सवाल का, पोहोंचे ना हकीकत ।
तब गुस्सा लेए के, बात कही मोंह सखत ।।१५।।

काजी व उसके यार कुरान के सवालों का जवाब नही दे पाए । कुरान के छिपे रहस्यों की हकीकत को वो नही पहचान पाए । तब गुस्से में आकर कटोर शब्दों में कहने लगे ।

फेर नवां किताब में, तिन बीच अल्ला कलाम ।
तुम एतो बात झूटी लिखी, ल्याए कीना इसलाम ।।१६।।

इस नई किताब में कुरान की आयतें आप उतार कर ले आए हो । आपने इस पुस्तक में झूठी बातें लिखी हैं । तुम इसलाम के प्रति द्वेष भावना लेकर आए हो ।

बड़ा डर किताब का, यों बोलन लगे सब ।
लाल को गुस्सा चढ़या, लई हाथ से किताब तब ।।१७।।

उन लोगों ने कुरान का बहुत ज्यादा डर दिखाकर अनुचित बातें कही । तब लालदास जी को भी क्रोध आ गया । उन्होंने मुसलमान काजी के हाथ से अपनी किताब छीन ली ।

फेर काजी ने कहया, ए किताब राखें हम ।
लई लाल के हाथ से, दई अपने खादम ।।१८।।

काजी ने पुनः कहा कि इन सवालों वाली किताब को हम रखेंगे इतना कहते हुए लालदास जी से वो किताब फिर काजी ने छीन कर अपने नौकर के हवाले कर दी ।

तब काजी झुक के, करने लगा जवाब ।
अब तुम कहा कहत हो, हमको इनके बाब ।।१९।।

फिर काजी शेख इसलाम विनम्रता से कपट पूर्ण भाव से कहने लगा । अब किताब के बारे में आप हमसे क्या कहना चाहते हो ।

Nijanand App

तब लालें देखिया, फिरी द्रस्ट जो इन ।
इन मारने का मन में लिया, ए बात ना सुने कान ॥२०॥

तब लालदास जी ने काजी की बदली हुई नीयत को पहचान लिया । वो समझ गए कि ये मुझे मारने का बहाना ढूंढ़ रहे हैं । इनकी इन बातों को ध्यान से नहीं सुनना चाहिए । वहां से चले जाना ही अच्छा समझा ।

तब झुक के काजी ने कहया, मन में धर के रोस ।
तुम हमसों कहा कहत हो, हुआ इन पर बड़ा अफसोस ॥२१॥

मन में गुस्सा लेकर, दिखावे में नम्रता से काजी ने लालदास से पुनः कहा आप हमसे क्या कह रहे थे । हमको आपके मुख से कुरान की ऐसी बातें सुनकर बहुत अच्छा लग रहा था । लालदास जी को काजी की बात सुनकर बड़ा अफसोस हुआ ।

तुम दावा करत हो, हमसों इमामत ।
एही बात फेर फेर कहे, लालें जवाब दिया इत ॥२२॥

हमसे ईमाम मेंहदी साहब के आने का दावा करते हो । काजी शेख इसलाम यही बात बार-बार दोहराने लगा अर्थात् हिन्दू होकर हमें पढ़ाना चाहते हो । तब लालदास जी ने कहा

हम तुम सों कहा कहें, कहावत हो हजरत तुम ।
एही बात कहत हैं, एता कहत हैं हम ॥२३॥

हम आप जैसे सम्मानित शरीयत के मालिक महानुभावों से क्या कह सकते हैं । हम तो वही बात कहेंगे जो बात कही है । इससे अधिक और हमें कुछ नहीं कहना ।

तब बोला सेख इसलाम, उन राह पाई नाहें ।
तब लाल गुस्से भया, ना चाहिए काढ़ो जुबाएं ॥२४॥

तब शेख इसलाम बोला पत्र लिखने वालों ने स्वयं ही राह नहीं पाई । इतना सुनते ही लालदास जी गुस्से में आ कर बोले आपको ऐसी अनुचित बात मुंह से नहीं कहनी चाहिए ।

अब हम तुमको, कबहुं ना दें पैगाम ।
अब हम फेर जात हैं, ले अपने घरों इसलाम ॥२५॥

अब हम आपको कयामत के जाहिर होने तथा ईमाम मेहंदी साहब के आ जाने का पैगाम देने कभी नहीं आएंगे । हम दीने इसलाम की हकीकत निजानन्द सम्प्रदाय को लेकर अपने घर वापस जा रहे हैं ।

Nijanand App

पीछे लगे बुलावने, सोहोबत के सब जन ।
निकसी मुख थें मुनकरी, कबहूं मुख ना देखें तिन ॥२६॥

काजी और उनके मित्र बाद में इन लोगों को (लालदास और नूर मुहम्मद को) बुलाने लगे । लालदास जी ने आने से इन्कार कर दिया और सोचा कि ऐसे लोगों का मुंह भी नहीं देखना चाहिए ।

इहां से चलके आए, घर मुफती अब्दुल रेहेमान ।
जिनसों मिलाप करके, कहया पैगाम सुभान ॥२७॥

तब वहां से चल कर लालदास जी और नूर महम्मद मुफ्ती अब्दुल रहमान के घर गए । उनसे मिलकर ईमाम मेंहदी साहब के प्रगट होने तथा कयामत के जाहेर होने का संदेश सुनाया । कयामत के निशान तथा ईमाम मेंहदी के प्रगट होने की बातें कही ।

कही हकीकत सरिएत, जो भई सेख इसलाम ।
करी मुनकरी इनने, हम पहुंचाया पैगाम ॥२८॥

अब्दुल रहमान को शेख इसलाम तथा शरीयत के कट्टर, कुरान की हकीकत से अनजान लोगों की हकीकत बताई । हमने तो संदेश पहुंचाया परन्तु उन लोगों ने पैगाम से मुनकरी करने की गुस्ताखी की।

अब हम तुमको कहत हैं, जो हमें आवे कछू दोस ।
तुम कहोगे हमको ना कहया, पीछे बड़ो होसी अफसोस ॥२९॥

लालदास मुफ्ती अहमद रहमान से कहते हैं अब हम आपको ईमाम मेंहदी साहब के आने तथा कयामत के जाहिर होने का पैगाम दे रहे हैं । बाद में हमारे पर दोष नहीं देना कि हमने आपको बताया नहीं था। बाद में आपको बड़ा पश्चाताप होगा ।

हम तुम एक वतन के, तिस वास्ते उमेटत हैं कान ।
हम देखा रसूल खुदाए का, तुम ल्याओ तिन पर ईमान ॥३०॥

हम और आप एक ही परमधाम की आत्माएं हैं इसलिए कान पकड़ कर आपका ध्यान अपनी ओर दिला रहे हैं । हम आपको यह विश्वास दिलाना चाह रहे हैं कि हमने अल्लाह तआला के रसूल को ईमाम मेंहदी साहिब के अंदर देखा है । तुम इस बात पर यकीन लाओ ।

तब जवाब मुफतें दिया, रसूल आवे बखत कयामत ।
सो तो अजू दूर है, तुम आज ल्याए क्या इत ॥३१॥

तब मुफ्ती अहमद रहमान ने जवाब दिया कि रसूल साहेब के आने की बात कयामत के लिए लिखी है, वो तो अभी बहुत दिनों के बाद होगी । आप लोग आज ही कयामत का संदेश लेकर यहां क्यों आए हो ?

Nijanand App

क्यों तुम जान्या दूर है, बीच किताब इकतलाफ ।
समझ हमें कछू ना पड़े, क्यों दिल होवे साफ ॥३२॥

लालदास जी ने उत्तर देते हुए मुफ्ती से पूछा आपने ये कैसे समझ लिया कि कयामत अभी दूर है। तब मुफ्ती अहमद बोला ये प्रसंग "इकतलाफ" नामक किताब में लिखा है । हमारी समझ में न आने के कारण मन में संदेह बना हुआ है ।

तब जवाब लालें दिया, ल्याओ किताब तुम ।
सब तारीखें समझाए के, एह बतावें हम ॥३३॥

तब लालदास जी ने कहा आप वह किताब ले आओ हम सारी तारीखों को मिलाकर समझा देते हैं। कयामत का निश्चित वक्त आ गया है । ये सिद्ध करके आपको समझा देंगे ।

सवाल दिखाए कुरान के, ताको दिया जवाब ।
ए तो आगे हो गये, ताके किस्से लिखे किताब ॥३४॥

कयामत और ईमाम मेंहदी से सम्बन्धित प्रश्न कुरान से खोजकर मुफ्ती को दिखाए और उनके ठीक माएने भी समझा दिए । ये सब घटनाएं तो पहले घट चुकी हैं । उन्हीं कहानियों को कुरान में लिख दिया गया है ।

बड़ी भूल तुम बीच में, ले डारत किस्से कुरान ।
वे रद जमाने हो गए, तुमको एही पहिचान ॥३५॥

तब लालदास जी ने कहा आप लोगों में कुरान के सही रूप को समझने में बड़ी भूल चल रही है। इसलिए कुरान की महत्वपूर्ण बातों को साधारण समझते हो और उन्हीं किस्सों को कहानियां कह देते हो। पहले का वक्त चला गया है परन्तु कुरान को उस बीते वक्त का इतिहास मात्र समझते हो ।

ए सारे किस्से आज के, रसूल आए इत ।
सरत लिखी सो भई, फरदा रोज कयामत ॥३६॥

कुरान में कहे प्रसंग और बातें आज वर्तमान समय के लिए भविष्य वाणियां सिद्ध हो रही हैं । जैसा कुरान में लिखा था, वो अब हो रहा है । रसूल साहब ने आने का वादा किया था वह भी श्री जी के रूप में प्रगट हो चुके हैं और कयामत के "कल" के समय का जो उल्लेख किया गया है, वही घड़ी आज चल रही है ।

Nijanand App

आए असहाब रसूल के, जाहिर भए मोमिन।
आज तुमसो हम कहत हैं, हमें दोस दीजो कोई जिन ॥३७।

रसूल साहब के साथी मोमिनों के रूप में प्रगट हुए हैं। इस रहस्य को आज हम आपसे प्रगट कर रहे हैं। बाद में, हमको किसी प्रकार का दोष न दें कि हमने किसी को बता कर अपना फर्ज पूरा नहीं किया।

तीन दिन सोहोबत भई, आया हादी का हुकम।
अब तुम उत जिन रहियो, ए पाती लिखी हम ॥३८॥

मुफ्ती के घर तीन दिन तक सत्संग चला। इधर श्री जी ने पत्र भेज कर निर्देश किया कि हे लालदास, नूर मुहम्मद ! अब आप वहां न ठहरो। शीघ्र वापस चले आओ। यह पत्र इसी उद्देश्य से हमने लिखा है।

नारायण दास ले आइया, सुन्या हक हुकम।
उते पानी ना पीजियो, सिताब बुलाए तुम ॥३९॥

नारायण दास इस पत्र को लेकर आया। उसमें लालदास जी ने अपने धनी श्री प्राणनाथ जी का आदेश पढ़ा। उसमें उन्होंने लिखा - वहां पानी भी पीने का समय नहीं लेना। शीघ्र अति शीघ्र आपको वापस बुलाया है।

ए तो लोग सरियत के, जिन तुम पर डारे तोहमत।
पोहोरा ए दज्जाल का, ए दुस्मन कयामत ॥४०॥

वह कट्टर शरा के गुलाम लोग आप पर कुछ तोहमत लगाकर दण्ड दे सकते हैं। दज्जाल का बोलवाला है। इसके गुलाम शरीयत के लोग कयामत पर कभी यकीन नहीं लाएंगे।

सुन पाती लालदास, संग चला नारायण।
नूर महम्मद आए मिला, सरिएत कबहूं ना ल्यावे ईमान ॥४१॥

पत्र के द्वारा श्री जी का संदेश सुन कर लाल दास नारायण दास के संग चल पड़े। इतने में नूर मुहम्मद भी साथ मिल गए। ये तीनों आपस में बातें करने लगे कि ये शरीयत के कट्टर लोग हमारे कहने पर कभी भी विश्वास लाने वाले नहीं है।

चले पीछे दिन तीसरे, पोहोंचे हादी कदम।
मिलाप कर बातें करी, जो बीतक भई हम ॥४२॥

दिल्ली से चलने के बाद तीसरे दिन ये तीनों श्री जी के चरणों में आ पहुंचे। अपने धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी से मिलकर बातें की जो उनके साथ बीती थी, उसका सारा हाल कह सुनाया।

Nijanand App

तब सुकराना राज का, बड़ा जो देखा इत ।
काल के मुख थें काढ़ के, राखे पनाह में साबित ॥४३॥

तब श्री राज जी महाराज की असीम कृपा के प्रताप को देखकर ये लोग मन ही मन में अपने धनी का कोटि-कोटि आभार प्रकट करने लगे कि हमारे प्राणनाथ जी ने कृपा करके मृत्यु के मुख से हमें निकाल कर अपने चरणों में सुरक्षित रख लिया है ।

महामत कहे ए मोमिनों, ए बीतक बुढ़ानपुर ।
अब कहों आकोट की, राखे पनाह में ज्योंकर ॥४४॥

अब धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि सुन्दरसाथ जी ! ये बुढ़ानपुर की बीतक आपसे कही है कि किस तरह से मोमिनों को श्री राजजी महाराज संकटों से बचा कर अपने चरणों में लेकर रक्षा करते हैं । अब आगे आकोट की बीतक कहते हैं ।

(प्रकरण ५५, चौ० ३०६२)

सिपारे दसमें मिनें, पाने सत्ताईस मिनें बयान ।
किया मोमिनों मजकूर, सरे के सैतान ॥१॥

कुरान के दसवें सिपारे के अंदर सत्ताइसवें पन्ने में जैसा प्रसंग लिखा है, वैसा ही मोमिनों के साथ शरा के गुलाम शैतान लोगों से संघर्ष हुआ ।

मेहेतर था कीनान का, काजी सरे का जेह ।
रसूल की दावत से, मुनकर हुआ एह ॥२॥

कुरान के अनुसार कीनान का एक प्रतिष्ठित व्यक्ति जो बादशाह के पास काजी था,उन्होंने रसूल द्वारा भेजे कयामत के आमंत्रण को ठुकरा कर मुनकरी की ।

जब मिला मिलावा मोमिनों, रूजू हुई सब जहान ।
दिन छटा जुमें का, हुई पहिचान ईमाम ॥३॥

जब मोमिन एक जगह इकट्टे हो जाएंगे तब दुनियां के सभी लोग दीने इसलाम निजानन्द सम्प्रदाय में शामिल होंगे । उस दिन को कुरान में छटा दिन कहा है और यह वो दिन है जिसमें मोमिनों की जागनी का कार्य पूरा होगा तथा सभी को श्री जी के रूप में ईमाम मेंहदी की पहचान होगी ।

बैठे बातां करने, जिनमें जो बीतक ।
दई साहिदी मोमिनों, गुझ खिलवत जहूर हक ॥४॥

सुन्दर साथ परस्पर चर्चा करने बैठे । सबने अपना अपना बीता हाल कहा । अपने मूल स्वरूप को याद कर परमधाम के मूल मिलावे में श्री राज महाराज के साथ हुए इश्क रब्द की चर्चा पर प्रकाश डाला। अपने अनुभव के अनुसार मोमिनों ने गवाही देते हुए खिलवत की गुझ बातों को जाहिर किया ।

Nijanand App